



# શ્રી શાંતજ્ય - મુક્ત સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/O. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોટા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૭ ૦૦૧

## સમ્યગ્જ્ઞાન વિશારદ

જાન્યુઆરી  
૨૦૨૦

### ◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆

એનરેલમેન્ટ નંબર



ગામ \_\_\_\_\_

વિદ્યાર્થીનું નામ \_\_\_\_\_

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જરૂરા

- (૧) સમબાય
- (૨) કાર્ય (૧ ચોણ)
- (૩) આંપાંધ્રાંધ્રસુર
- (૪) શુદ્ધકર્મ
- (૫) અશ્રદ્ધા
- (૬) મદ્રાસ
- (૭) સભુદુધાત
- (૮) નિયતિવાદ
- (૯) ક્રોડોફોન્
- (૧૦) ચોરાચાળા
- (૧૧) વિજ્યાદીવી
- (૧૨) વાયુકાર્યાને
- (૧૩) કાંતિકારીઓ
- (૧૪) અંધાલ્પુર્ક
- (૧૫) શૈક્ષાલગાર્ડ્સ
- (૧૬) તલસ્પર્શી
- (૧૭) નાચવિભાગી
- (૧૮) કોલિંગ / ભંગ (૨)
- (૧૯) જાસ્તાય
- (૨૦) રંમણીં

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

- (૧) શ્રી સાધુરાણ
- (૨) જ્યાચબશારદ -
- (૩) મારીઓરણસુર
- (૪) સિદ્ધસેન દિવાદ
- (૫) પુરુષાદી
- (૬) લિરદા
- (૭) જશાખત કુમાર
- (૮) રાજાનૃત્સિંહ
- (૯) અગોદાર
- (૧૦) ક્રીણ
- (૧૧) પાનેંગ / પાનેં
- (૧૨) સુરુણાદ
- (૧૩) કુલન્દી / ઉસે
- (૧૪) ક્રીણ અને બોચો
- (૧૫) કાર્યાંગ
- (૧૬) કિંદ્રેન્જિયાં
- (૧૭) કુલનશાળા
- (૧૮) અતસુખ
- (૧૯) નિયતિવાદ
- (૨૦) દાયાં

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ.

- (૧) સંસ્કારા
- (૨) રંમણું, રંમણું
- (૩) પદને વિધી
- (૪) જમાના / જિનંડુ

પ્રશ્ન-૪ જોડાં જોડો.

- |     |   |      |    |      |    |      |    |
|-----|---|------|----|------|----|------|----|
| (૧) | ૫ | (૬)  | ૨  | (૭)  | X  | (૮)  | ૧૮ |
| (૨) | ૪ | (૭)  | ૯  | (૯)  | X  | (૯)  | ૨૪ |
| (૩) | ૫ | (૮)  | ૪  | (૧૦) | ૧૦ | (૧૧) | ૧૫ |
| (૪) | ૮ | (૯)  | ૧૦ | (૧૧) | ૧૨ | (૧૨) | ૧૨ |
| (૫) | ૩ | (૧૦) | ૭  | (૧૨) | ૧૧ | (૧૩) | ૮  |

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ.

(૧)	૫ (૫)
(૨)	૬ (૭)
(૩)	૩૨ (૩૨)
(૪)	૮૮ (૯)
(૫)	૪૧૮ (૫)
(૬)	૩
(૭)	૧૯ (૧૬)
(૮)	૧૦૮ (૧૦૮)
(૯)	૭૮ (૭૮)
(૧૦)	૫ (૫)

પ્રશ્ન-૬ અને પ્રશ્ન-૭ નંબર

(૧)	✓	(૧)	૧૯	૮
(૨)	✓	(૨)	૧૩	૧૫
(૩)	X	(૩)	૧	૧
(૪)	X	(૪)	e	૧૨
(૫)	X	(૫)	C	૬
(૬)	✓	(૬)	૧૮	e

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુણ પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ કુલ ગુણ.

રીમાર્ક

તપાસનારની સહી

पृष्ठ नं ०८ — १. केवली समुद्रधात — आत्मा स्वस्वभावमां रहेना आत्मप्रदेशोंमें सातड़ा  
ये परस्वभावमां परिणामाये हैं जैन समुद्रधात कहे दें। केवली भगवान् ना वेदवारीकर्त्तव्यी  
रक्षाप्राप्ति — इसी आत्मप्रदेशोंमें जियाजी सभव होता है भूज्ञेत्समान करवाउवली समुद्रधात करदू  
केवली समुद्रधात उपलब्धानी नेहाच खीला ने नहीं। अमा केवली पूर्वमें सभवी प्राप्ता एवं शात्मप्रदेशोंमें  
नेहाच और ज्ञान लोकान्तरुधी शरीरनी खलाकाढ़ी न है करे दें। पढ़ी जीज रामये आत्मप्रदेशोंमें  
पूर्वमें पश्चिम इलाली ने डायाट करे दें। गीज सभवे रवेयानी रथे दें। योग्या सभवों द्वाये राजगोक्त  
इलाली ने चौदराज लोकभवी है दें। अनेकर्त्तव्यी ने स्थानी ने सभवार करे दें। कर्त्तव्यी सिद्धिपूर्वी प्रीता नी मुग स्थानी  
मां आवाया गोटे आत्मप्रदेशोंमें ने सभवे दें। पूर्वमें सभवे चौदराजलोक्यों इलालों आत्मप्रदेशोंमें पापार्थी  
दें। छाका सभवे रवेयाने सभवे, सातभासभवे क्याटने इस्तेवरे आठमां सभवे हैं ने संतरे साने स्वस्वभाव  
चाय है। जेवी रीते आठसभवमां केवली समुद्रधात नी लिया संपूर्ण चाय है।

२. पृष्ठीकायादि — पृष्ठीकायादि दस पृष्ठ लेटले पाँच स्वायर (पृष्ठीकायादि, आपडाय, तेत्रिया  
वार्तायादि भी वनस्पतिकाय) ग्राम विक्षेपित्तर्य (बीदीन्द्रिय, तेदीन्द्रिय, सउरेन्द्रिय) गर्भजु निर्वाय  
जाने गर्भजु भन्नेहर्य। आ दस पृष्ठमां पृष्ठी, आ जेवे वनस्पतिकायादि बाज्यो आवे गाने उपायान  
चाय आ दस पृष्ठमां तेत्रियादि-वार्तायादि आय। आ रीते दस पृष्ठों चां गति-आवायि सभजती।

३. सदावप्यक — — हेताधीदेव महावीरस्वामीना तथानी सत्त्वानी कोईने नियतिवादीनी पृष्ठपृष्ठा। देव  
अग्रजाग्नें आज्ञविका भत पवारिती, गोदामाना नियतिवाद चां गानबारा लक्ष्मान्द्वार सदावप्यक  
सत्त्वासमाविदा महावीरस्वामी जै पृष्ठियां — द्विसदावप्यक्षा आ भद्रा बाटीबालुपाश्चा आपो चायावेन है  
तारु पृष्ठान्यन भने हैं। त्यारु ये कहन हैं। "भगवान्! नियतिवाद चां भने हैं। जेमा पूजने प्रयात्त  
नियतिप्रयोग शुंको शक्ते?" प्रत्युम्ने कहनु — कोइ भाग्य नाडीछी तभारा आ वास्तो झोड़ीनाए  
मध्यावा तभारी पत्तीउपर घलात्तर करे तो ऐ कुहत्योनी कुवाखदारी रेमाणस पर नाप्तेशोडे नियति  
पर नाजी शान रहेहो? "सदावप्यक्षे कहनु — "त्यारु शांत भरी रहीशक्ते रेमाणस नेपारी नाप्तीरा"  
प्रत्युम्नेकहनु — जेनाख्यतो जेथ्यो ते तमे ऐ भाग्यसने जेना जायीनो जवाखदार भानो छो पाण क्यारे दरेदार  
नियतिप्रद्य है तो जेभाग्यसने जवाखदार भां भावो? नियतिवादलो शुंखो जाय छां भाग्यस पृष्ठाव  
पापो ने नियतिवाद नानीचे दाके भने जीजाना भापोनो भद्रलो वाव अने आण दाकें, शुं निय  
वाद आ आधारे प्रगति दाई शक्तानी-जगत्तु व्यावर-या भजी शक्तानी? प्रत्युम्नी वात सांभाग्यासदाव  
गी शुंगाय झुल्ली गाई अने शत्ताना दर्शन चाया। सम्यादृश्वनी नी प्राप्ति थाई।

४. जगत्याद्युर्सरि — श्री जगत्याद्युर्सरि ज्ञानेदशानी ज्ञाने महान तपरवीहता तमेष्वां आधार  
मां दुर इतीजरायार्यो साहो वाए कही विजयभेदवत्तो मेवाडना राणा जैत्रसिंह तमने "हीरा" आय  
मानवत्तु भिरु जापतो तेसो "हीरला जगत्याद्युर्सरि" ना आमे विष्यात चाया। भोताना गुरुनरवारी  
बन्दा त्यार ची सुरिल्लजे यावक्कुवन चायेभिलतप चालु कर्याहतां। आ तपना भारभा वष्ट आहेह  
मां नंदी डिनारे जूधी हमेशा आतापना लई द्यान उरता हता। तमनी तपर-याना प्रत्याव तेमनां शृपत  
जेने पत्ताव वध्या हता। मेवाडना राणा जैत्रसिंह जेमनी पुश्यसा सांभाग्यी दर्शने आव्या सुरिल्लजे तेज  
गमडत्तु भुजारविंद जेने देवकांति जेदी "महानपरवी" भेद भोती तेज्या जेने "त्वा" झेवु लेफ्टर्स्ट्री  
"शुंशी शांतिनाथ भा" ना विशेषणो — शांतिना गृहसभान, व्यवस्थानवर्यानाथा, भगवान,  
द्रव्यमनभावपूजाने योग्य, ज्यवान, यशस्वी, योगीवर, योग्यस सतिशययुक्त, प्रशस्त, त्रिविन  
पुनित, शांतिना अद्विपति, सर्व देवसमुहना रवागीओऽसी विश्वाटप्रदारे पूजायेला, शांत  
जेने विश्वाना योडानु रक्षणु करवा आ तपर अेवा श्री शांतिनाथ, श्री समव्य भवसुप्ति  
जाता इत्तार भव्यादिपद्वेन शाभन उरनार। उत्तराव भत पिशाच्य तथा शाकिनीसोरो